# *शोध पत्र*

## *अमर शहीद भाई मतीदास और भाई सतीदास जी का अनमोल स्वर्णीम इतिहास*

**धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' का ४०० वां वर्ष गुरुपर्व समारोह**

**स्थान: अमर शहीद भाई मतीदास निवास, बिलासपुर जिला रामपुर (उत्तरप्रदेश) पिन २४४९२१ मोबाइल क्रमांक ९९१७०७६१४३ तारिख:०३/०४/२०२२**

***शोध निर्देशक:***

***इतिहासकार सरदार***

***भगवान सिंघ जी 'खोजी' पटियाला***

***मो.९७८१९९३११३***

***शोधार्थी***

***स.रणजीत सिंघ अरोरा 'अर्श' पुणे***

***मो.९०९६२२२२२३***

# अनुक्रमणिका


| | |
|---|---|
| प्रमाण पत्र | पृष्ठ क्रमांक -02 |
| आभार ज्ञापन | पृष्ठ क्रमांक - 03 |
| प्रस्तावना | पृष्ठ क्रमांक - 04 |
| विषय प्रवेश | पृष्ठ क्रमांक -07 |
| परिशिष्ट | पृष्ठ क्रमांक - 25 |
| शोध पत्र की कुंजी | पृष्ठ क्रमांक - 30 |
| शोध पत्र के विषय से संबधित साहित्य का पुनरावलोकन | पृष्ठ क्रमांक - 33 |
| शोध पत्र का उद्देश्य | पृष्ठ क्रमांक -34 |
| शोध पत्र का निष्कर्ष | पृष्ठ क्रमांक -35 |
| संदर्भ सुची | पृष्ठ क्रमांक - 36 |

# *प्रमाण पत्र*

मैं प्रमाणित करता हूं कि सरदार रणजीत सिंघ अरोरा 'अर्श' द्वारा अमर शहीद भाई मती दास - भाई सती दास परिवार का अनमोल स्वर्णीम इतिहास के संबंध में राष्ट्र भाषा हिन्दी में लिखा हुआ शोध पत्र शीर्षक: अमर शहीद भाई मती दास - भाई सती दास परिवार का अनमोल स्वर्णीम इतिहास| मेरे निर्देशन में संपन्न हुआ है| शोध पत्र में प्रस्तुत की गई सभी जानकारी और ऐतिहासिक तथ्य सही है|

मैं अनुशंसा करता हूं कि बहुत ही कम समय में दिये गये विषय पर आप जी ने एक उत्तम प्रारुप में शोध पत्र लिख कर दिनांक ३ अप्रैल २०२२ को बिलासपुर में भाई मतीदास के पारिवारिक के द्वारा आयोजित ४०० वर्ष, धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' के प्रकाश पर्व के अवसर पर इस शोध पत्र को टीम खोज - विचार की और से अपने तृतीय शोध पत्र के रुप में प्रस्तुत किया है|

सिक्ख इतिहास और गुरुबाणी पर आप जी द्वारा अनेकों रचनाएं मेरे मार्ग दर्शन में रचित की गई है| भविष्य के लिये मेरी और से अनेकों शुभकामनाएं आप जी को प्रेषीत की जा रही है|

शोध निर्देशक:-

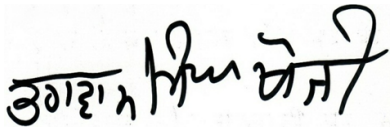

(इतिहासकार सरदार भगवान सिंघ 'खोजी')|

तारिख: ०३/०४/२०२२

स्थल: बिलासपुर (उत्तर प्रदेश)

# आभार ज्ञापन

इस शोध पत्र कार्य को सम्पन्न करने हेतु संबधित परिपत्र की रचना में मुझे अनेकों व्यक्तियो का सहयोग प्राप्त हुआ है, इन सभी के सहयोग एवं मार्गदर्शन के कारण ही इस शोध पत्र को लिख पाना संभव हो सका है, मैं व्यक्तिगत रुप से इन सभी का कृतज्ञ एवं आभारी हूं|

मैं हमारी खोज - विचार टीम के आधार स्तंभ इतिहासकार सरदार भगवान सिंघ जी 'खोजी' का विशेष आभार व्यक्त करता हूं कि मुझे विशेष रुप से मेंरे इस तृतीय शोध पत्र लेख को रचित करने में उन्होंने मार्गदर्शन कर प्रोत्साहित किया|

मैं विशेष रूप से 'अमर शहीद भाई मतीदास जी के पारिवारिक सदस्य भाई चरणजीत सिंघ जी (निवासी: बिलसापुर, जिला रामपुर उत्तर प्रदेश) का भी आभारी हूं कि उन्होंने मुझे इस शोध पत्र को प्रस्तुत करने के लिए विशेष रूप से अनुरोध कर आमंत्रित किया| मैं अपने परिवारजनों और मेरी टीम के सहयोगीयों के साथ - साथ उन सभी का आभारी हूं जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस शोध पत्र लेखन को संपूर्ण करने में सहयोग, प्रोत्साहन, एवं उत्साहवर्धन किया है|

शोधार्थी:-

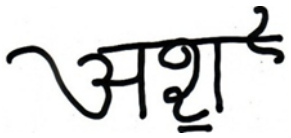

(सरदार रणजीत सिंघ अरोरा 'अर्श' पुणे|)

तारिख: ०३/०४/२०२२

स्थल: बिलासपुर (उत्तर प्रदेश)

# प्रस्तावना

शहीद भाई मती दास - भाई सती दास परिवार का अनमोल स्वर्णीम इतिहास|

ऐसा कहा जाता है कि जिस बाग का माली बेईमान हो जाए उसके फूल भी नहीं और फल भी नहीं! जो बकरी शेर की गुफा में प्रवेश कर जाए उसकी हड्डी भी नहीं और खाल भी नहीं! वैसे ही जो कौम अपनी विरासत अपना इतिहास भूल जाये, वो आज भी नहीं और कल भी नहीं! इतिहास कौम का आईना होता है, जिस कौम में से रक्त की लाली ही समाप्त हो जाये, निश्चिती वो कौम दुनिया के नक्शे से नेस्तनाबूद हो जाती है।

अमर शहीद भाई मती दास और भाई सती दास जैसे अमर शहीदों की बेमिसाल शाहादत को समर्पीत है, धन्य - धन्य गुरु श्री ग्रंथ साहिब जी की अधोरेखित बाणी:-

जू लरै दीन के हेत. . .जू लरै दीन के हेत ।।
गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाउ।।
खेतु जु माँडिओ सूरमा अब जूझन को दाउ।।
सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दिन के हेत।।
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु।।
जू लरै दीन के हेत . . .जू लरै दीन के हेत ।।

अर्थात्..

वो ही शूरवीर योद्धा है, जो दीन दुखियों के हित के लिए लड़ता है। जब मन - मस्तिष्क में युद्ध के नगाड़े बजते हैं तो धर्म योद्धा निर्धारित कर वार करता हैं और मैदान - ए - जंग में युद्ध के लिए 'संत - सिपाही' हमेशा तैयार - बर - तैयार रहता हैं। वो 'संत - सिपाही' शूरवीर हैं, जो धर्म युद्ध के लिए जूझने को तैयार रहते हैं। शरीर का पुर्जा - पुर्जा कट जाए परंतु आखरी सांस तक मैदान - ए - जंग में युद्ध करता रहता हैं।

भक्त कबीर जी द्वारा रचित यह वाणी गुरु ‘श्री ग्रंथ साहिब जी’ में 'मारु राग' के अंतर्गत अंकित है। वीर रस से ओत - प्रोत इस 'शबद' (पद्य) जैसी रचनाओं से प्रेरित होकर जो 'संत - सिपाही', धर्म योद्धा, 'देश - धर्म' की रक्षा के लिए और जुल्मों के खिलाफ लड़ते हुए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर वीर गती को प्राप्त होता है; वो 'शहीद' कहलाता है। 'शहीद' शब्द का अर्थ करने के लिए और विश्लेषण करने के लिए हमें इतिहास के पन्नों को पलटना होगा।

यदि सिक्ख इतिहास को परिपेक्ष्य किया जाये तो गुरु ‘श्री ग्रंथ साहिब जी मैं 'शहीद' शब्द दो बार अंकित है। पहली बार 'शहीद' शब्द (पद्य) 'श्री राग' में पृष्ठ क्रमांक ५३ में धन्य - धन्य ‘श्री गुरु नानक देव साहिब जी’ द्वारा रचित वाणी में अंकित है:-

पीर पैकामर सालक सादक सुहदे अउरु सहीद।।

दुसरा 'शबद' (पद्य) 'मल्हार राग' में भक्त कबीर जी द्वारा उच्चारित पृष्ठ (अंग) क्रमांक १२९३ पर अंकित है:-

जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे बधु करहि मानीअहि सेख सहीद पीरा।।

इस तरह से 'शहीद' शब्द का उल्लेख गुरु ‘श्री ग्रंथ साहब जी’ मैं अंकित किया गया है। इसी प्रकार ' शहीद' शब्द भाई गुरदास जी द्वारा लिखित 'वारां' में भी अंकित है:-

मुरदा होइ मुरीद न गली होवणा।
साबरु सिदकि सहीदु भरम भउ खोवणा।।
अर्थात्...

जिसके पास 'शबद और सिदक' है; वो शहीद कहलाता है। अपने भीतर भ्रम और भय को दूर करने वाला 'शहीद' कहलाता है। धन्य - धन्य गुरु ‘श्री नानक देव साहिब जी’ के समय से ही सिक्ख धर्म में 'शहीद' होने की परंपरा रही है। जिस समय 'बाबर' के द्वारा लाहौर शहर में आग लगाई गई थी, उस समय शहर के सभी घरों को जलाया जा रहा था। उस समय धन्य - धन्य गुरु ‘श्री नानक देव साहिब जी’ का एक सिक्ख भाई 'तारु पोपट' पानी की बाल्टी से जब आग बुझाने की कोशिश करता है तो उसे उस आग में जलाकर 'शहीद' किया गया था।

सिक्ख धर्म के गुरुओं में से पांचवें गुरु, गुरु ‘श्री अर्जन देव साहिब जी को 'शहीदों के सरताज' की उपाधि से विभूषित किया गया था। जिंहोने धर्म ग्रंथों की इज्जत, आन - बान और शान के लिए तपते हुए तवे पर बैठकर बेमिसाल  शहीदी दी थी। गुरु ‘श्री हरगोबिंद साहिब जी’ (धन्य - धन्य गुरु ‘श्री नानक देव साहिब जी की ६वीं ज्योत ) ने अपने कार्यकाल में चार युद्ध किए थे। इन युद्धों में वीरगति को प्राप्त करने वाले सिक्ख 'शहीद' कहलाए। इसी तरह इंसानियत के जमीर की रक्षा के लिए ९ वें गुरु, गुरु ‘श्री तेग बहादुर साहिब जी’ ने दिल्ली के चांदनी चौक में अपने सिक्ख अमर शहीद भाई मती दास, भाई सती दास, और भाई दयाला जी के साथ प्राप्त की 'शहीदी' अभूतपूर्व है। गुरु ‘श्री तेग बहादर साहिब जी’ जिन्हें (सृष्टि की चादर के नाम से भी संबोधित किया जाता है।) के लिए गुरुवाणी में अंकित है:--

धरम हेत साका जिनि कीआ||
सीसु  दीआ परु सिररु न दीआ।।

अर्थात् इंसानियत की जमीर के लिये आप जी ने अपनी शहादत देकर इंसानियत के धर्म की रक्षा की थी और इस महान शहादत के पूर्व आप जी के सबसे प्रिय एवम् निकटवर्ती सिक्ख अमर शहीद भाई मती दास जी, भाई सती जी और भाई दयाला जी ने अद्भूत शहादत प्राप्त कर अपना नाम भारत के इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में अंकित किया है| अमर शहीद भाई मती दास जी और भाई सती दास जी के इस छिब्बर परिवार के इतिहास को टीम ‘खोज - विचार’ के द्वारा गहन खोज एवम् अध्ययन कर, इस ‘शोध - पत्र’ को भाई मती दास जी के पारिवारिक सदस्य_ सरदार चरणजीत सिंघ जी के विशेष अनुरोध पर एवम् इतिहासकार सरदार भगवान सिंघ जी ‘खोजी’ के निर्देशन में इसे रचित किया गया है|

# *विषय प्रवेश*

अमर शहीद भाई मती दास और भाई सती दास के इतिहास को परिपेक्ष्य करे तो ज्ञात होता है की, ऐतिहासिक स्त्रोतों के अनुसार महाराजा दाहिर सेन के वंशज श्री गौतम दास जी थे, गौतम दास जी धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' के समकालीन थे| जब गौतम दास जी धन्य - धन्य गुरु 'श्री अर्जन देव साहिब जी' के सानिध्य में आए तो उन्होंने अपने आप को सिक्ख धर्म की सेवा में समर्पित कर दिया था, गुरु 'श्री अर्जन देव साहिब जी' ने आप जी को सिक्ख धर्म के प्रचार - प्रसार के लिए करियाला नामक स्थान पर भेजा था, यह स्थान जिला चकवाल पाकिस्तान में स्थित है| इस जिले में सनातन धर्म का प्रसिद्ध शिव जी का कटास राज नामक मंदिर समीप ही स्थित है| इसी स्थान पर श्री गौतम दास जी ने निवास कर सिक्ख धर्म के बूटे को प्रफुल्लित किया था| अमर शहीद भाई मती दास जी और भाई सती दास जी के परिवार के सदस्यों ने लगभग ४५० वर्षों तक इस करियाला नामक स्थान पर निवास किया था एवं यह संपूर्ण परिवार इस स्थान पर चढ़दी कलां (खुशहाल एवं संपन्न) परिवारों में से एक माना जाता था|

यह छिब्बर परिवार जाति से मौहीयाल ब्राह्मण परिवार है (इस परिवार को आम संगतें "भाई जी का परिवार कहकर संबोधित करती है), मौहियाल ब्राह्मण परिवार के पैतृक गांव के रूप में इस करियाला ग्राम को निरूपित किया जाता है| वर्तमान समय में इस करियाला ग्राम को मौहियाल ब्राह्मण परिवारों का जेरूसलम भी कह कर संबोधित किया जाता है| भाई मती दास जी का शूरवीर योद्धाओं का परिवार मौहियाल ब्राह्मणों की ढाल था कारण इस स्थान के पश्चिम में अफगानी शासकों का राज था एवं पूर्व में मुगल शासक शासन करते थे|

राजवंश के कुल दीपक भाई गौतम दास जी के सुपुत्र भाई पराग जी थे, भाई परागा जी धन्य - धन्य गुरु 'श्री हरगोबिंद साहिब जी' की सेना के महान सेनापति थे, सेनापति भाई परागा जी ने धन्य - धन्य गुरु 'श्री हरगोबिंद साहिब जी' के नेतृत्व में सन् १६२८ और सन् १६३५ के युद्धों में बड़ी शूरवीरता से हिस्सा लेकर अपनी अद्भुत बहादुरी का परिचय दिया था और इन युद्ध में मुगल बादशाह जहांगीर सेना के विरुद्ध लड़ते हुए अभूतपूर्व युद्ध कौशल का परिचय देकर गुरु पातशाहा जी से शाबाशी भी पाई थी|

सन् १६३५ की करतारपुर की जंग में धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' ने १४ वर्ष की आयु में अपने तेग नामक शस्त्र से जौहर दिखाकर दुश्मन के दांत खट्टे कर, बेमिसाल विजय प्राप्त की थी| इस युद्ध में एक सैन्य टुकड़ी का नेतृत्व भाई परागा जी ने किया था|

अपने दूसरे युद्ध में भाई परागा जी में अभूतपूर्व वीरता का प्रदर्शन कर भारी तादाद में मुगल सेना को नुकसान पहुंचाया था| इस युद्ध में आपकी दांयी बांह कट गई थी, पश्चात युद्ध के मैदान में दुश्मन से भाई परागा जी ने डटकर मुकाबला कर अपनी विजय को सुनिश्चित किया था| ऐसे शुरवीर सिक्खों के सम्मान में धन्य - धन्य गुरु ' श्री ग्रंथ साहिब जी की बाणी में अंकित है:-

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ||

सिरु धरि तली गली मेरी आउ||

इतु मारगि पैरु धरीजै||

सिरु दीजै काणि न कीजै||
(अंग क्रमांक १४१२)

भाई परागा जी की शुरवीरता और की गई सेवाओं से धन्य - धन्य गुरु 'श्री हरगोबिंद साहिब जी' अत्यंत प्रसन्न हुए थे और उपहार स्वरूप गुरु पातशाह जी ने भाई परागा जी को एक अति उत्तम नस्ल का घोड़ा ₹ ५०० रोख एवं अपनी स्वयं की कृपाण भेंट स्वरूप प्रदान की थी| साथ ही गुरु पातशाहा जी ने वचन किए थे कि आप जी अपने पैतृक ग्राम करियाला में निवास कर सिक्ख धर्म का प्रचार - प्रसार करें|

भाई परागा जी के सुपुत्र लक्खी दास जी ने भी अपने पिता जी के पद चिन्हों पर चलते हुए सिक्ख धर्म का प्रचार - प्रसार किया था| भाई लक्खी दास जी के सुपुत्र भाई हीरानंद जी ने भी अपना जीवन 'गुरु पंथ खालसा' की सेवा में समर्पीत किया था| भाई लक्खी दास जी एवं उनके सुपुत्र भाई हीरानंद जी धन्य - धन्य गुरु 'श्री हरगोबिंद साहिब जी' एवं धन्य - धन्य गुरु 'श्री हर राय साहिब जी' की सेवा में समर्पित रहे थे|

जब धन्य - धन्य गुरु 'श्री हर कृष्ण साहिब जी' गुरु गद्दी पर विराजमान हुए तो भाई हीरा नंद जी के भ्राता भाई दरगाह मल जी गुरु दरबार के दीवान के रूप में मनोनीत हुए थे| भाई दरगाह मल जी और उनके साथी ही दिल्ली से बाबा बकाला साहिब नामक स्थान पर गुरता गद्दी की समस्त सामग्री (नारियल, तिलक,कलगी और चावल इत्यादि) लेकर आए थे एवं भविष्य के गुरु को गुरु गद्दी पर विराजमान करने का अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य भाई दरगाह मल जी को सौंपा गया था| जब

धन्य - धन्य गुरु ‘श्री तेग बहादर साहिब जी’, धन्य - धन्य गुरु ‘श्री नानक देव साहिब जी’ की ९वीं ज्योत के रुप में गुरता गद्दी पर विराजमान हुए तो उस तत्कालीन समय में भी भाई दरगाह मल जी गुरु दरबार के दीवान थे|

वयोवृद्ध भाई दरगाह मल जी ने गुरु घर की भविष्य की सेवाओं के लिए अपने सगे भाई हीरानंद जी के सुपुत्र अमर शहीद भाई मती दास जी और भाई सती दास जी को समर्पित किया था| ऐतिहासिक तथ्यों से ऐसा प्रतीत होता है कि आयु में भाई मती दास जी, भाई सती दास जी से बड़े थे| भाई मती दास जी को गुरु दरबार का दीवान भी मनोनीत किया गया था एवं भाई सती दास जी फारसी, अरबी, उर्दू एवं ब्रजभाषा के विद्वान थे| आप जी ने गुरु पातशाहा जी के मुखारविंद से उच्चारित वाणीयों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी किया था साथ ही गुरबाणी को तुरंत लिख कर सुरक्षित भी आप जी करते थे| भाई सती दास जी उत्तम दुभाषीये थे एवं गुरबाणी को सरल और आम भाषा में लिखकर संगतों को पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य भी आप भी करते थे| इस सरल आम भाषा ने ही भविष्य में हिंदी और उर्दू भाषा का रूप धारण किया था|

जब धन्य - धन्य गुरु ‘श्री तेग बहादर साहिब जी’ को दिल्ली के चांदनी चौक में क्रूर यातनाएं देकर शहीद किया गया था तो उस समय की समस्त आंखों देखी घटनाओं का विवरण भी भाई सती दास जी ने स्वयं अंकित किया था| इस पूरे महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक साहित्य को औरंगजेब के सिपाहियों ने आपसे जबरदस्ती लेकर नष्ट कर दिया था| धन्य - धन्य गुरु ‘श्री तेग बहादर साहिब जी’ जब अपनी धर्म प्रचार - प्रसार की यात्रा के लिये देशाटन किया था तो अमर शहीद भाई मती दास जी और भाई सती दास जी ने गुरु पातशाह जी के सानिध्य में रहकर अपनी उत्तम सेवाएं प्रदान की थी| धन्य - धन्य गुरु ‘श्री तेग बहादर साहिब जी’ दोनों ही भाइयों का अत्यंत लाड करते थे| उस तात्कालीन समय में गुरु पातशाहा जी ने स्वयं दोनों भाईयों के शीश पर दस्तार सजा के सम्मान प्रकट किया था|

९ नवंबर सन् १६७५ को अमर शहीद भाई मती दास जी को भी इस्लाम ना कबूल करने के कारण बांधकर शरीर के बीच से आरे से चीर कर दो टुकड़े कर दिए थे कारण जब धन्य - धन्य गुरु ‘श्री तेग बहादर साहिब जी’ को एक ऐसे पिंजरे में कैद किया गया था जिस में कोई भी व्यक्ति ना ठीक से खड़ा हो सकता था और ना ही ठीक से लेट सकता था और ना ही ठीक से बैठ सकता था साथ ही इस पिंजरे नुमा जंगले में जगह - जगह नुकिले चाकू बांध के रखे हुए थे| जब गुरु पातशाहा जी इस असहनीय दर्द को सहन कर, उस अकाल पुरख का बहाना मान कर, शुक्र मना रहे थे तो गुरु पातशाहा जी की इस अवस्था को देखकर भाई मती दास जी अत्यंत क्रोधित हो गए थे और उन्होंने गुरु पातशाहा जी से हुकुम मांग कर कहा था कि यदि आप आदेश करें तो मैं अपनी आध्यात्मिक शक्तियों के जोर पर इस मुगल सल्तनत की दिल्ली से लेकर लाहौर तक, ईट से ईट बजा सकता हूं| जब इस घटना की चुगली उस समय में तैनात मुगल सैनिकों ने काजी से की तो काजी ने

आदेश दिया था कि भाई मती दास जी की जुबान के दो टुकड़े कर दिए जाएं और इसी आदेश को पालन करने हेतु अमर शहीद भाई मती दास जी को लकड़ी की चौखट में बांधकर आरे से उनके दो टुकड़े कर दिये गये थे|

अमर शहीद भाई मती दास जी को शहीद करने से पहले उन्हें पुन: इस्लाम धर्म स्वीकार करने का लालच दिया गया था| उस समय अमर शहीद भाई मती दास जी ने उन जल्लादों से कहा था कि यदि मैं इस्लाम धर्म स्वीकार कर लो तो क्या मेरी मृत्यु नहीं होगी? इस पर जल्लादों ने कहा था कि यह कैसे संभव है? मृत्यु तो प्रत्येक व्यक्ति की होती है तो उन्होंने हंस कर उत्तर दिया था कि मृत्यु का आलिंगन करना है तो मैं अपने धर्म में रहकर ही मृत्यु को गले लगाउंगा| उस समय काजी के और से अमर शहीद भाई मती दास जी को पुन: लालच देकर कहा गया कि यदि आपने इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिया तो आपको जमीन - जायदाद दी जायेगी, हूरों के टोले भेंट स्वरुप दिये जायेंगें एवम् बेशकिमती वस्तुएं आपके कदमों तले होगी; उस कठिन समय में भाई मतीदास जी ने दृढ़ता से उत्तर देकर कहा था की मुझसे इस्लाम कबुल करवाना पत्थर में से दूध निकालने के जैसा होगा, इस उत्तर को सुनकर वातावरण निशब्द: हो गया था| जब अमर शहीद भाई मती दास जी को शहीद किया जा रहा था तो उनसे पूछा गया कि आप की अंतिम इच्छा क्या है? तो उन्होंने कहा था कि मेरा मुंह गुरु पातशाहा जी के सम्मुख कर दिया जाए| जब अमर शहीद भाई मती दास जी के शरीर के दो टुकड़े कर दिए गए तो भी उनके शरीर से उनके द्वारा उच्चारित जपु जी साहिब के पाठ की आवाज सुनाई पड़ रही थी| जब भाई मती दास जी के शीश पर आरा चलाया गया तो उन्होंने एकाग्र होकर जपु जी साहिब का पाठ प्रारंभ कर दिया था और जब आरे से काट कर उनके शरीर के दो टुकड़े हो गए थे तो उसके पश्चात भी उनके शरीर से जपु जी साहिब के पाठ की आवाज आ रही थी, तात्पर्य यह है कि अमर शहीद भाई मती दास जी का आध्यात्मिक बल इतना अधिक था कि उन्होंने जब तक जपु जी साहिब का पाठ पूरा नहीं कर लिया तब तक उन्होंने अपने प्राण नहीं छोड़े थे

आध्यात्मिक की इस सर्वोच्च अवस्था को धन्य - धन्य गुरु 'श्री ग्रंथ साहिब जी' में इस तरह अंकित किया गया है:-

गुरमुखि रोमि रोमि हरि धिआवै||
नानक गुरमुखि साचि समावै||
(अंग क्रमांक ९४१)

अर्थात् जो गुरमुख पुरुष होता हैं वह रोम - रोम से ईश्वर का ध्यान करता रहता है, हे नानक! इस प्रकार गुरमुख परम सत्य में ही विलीन हो जाता है| इससे यह सिद्ध होता कि एक आम इंसान का तो केवल मुख और जुबान ही बोलती है परंतु गुरमुख इंसान के शरीर पर स्थित करोड़ों रोम - रोम उस अकाल पुरख के नाम मे विलीन होकर बोलते हैं| शरीर के दो

टुकड़े होने के पश्चात भी सर्वोच्च ध्यान की अवस्था में अमर शहीद भाई मती दास जी के शरीर का रोम - रोम जपु जी साहिब का पाठ कर रहा था और पाठ साहिब संपूर्ण होने के पश्चात ही अमर शहीद भाई मती दास जी ने अपने प्राणों का त्याग किया था| अमर शहीद भाई मती दास ने हंसते - हंसते शहीदी का जाम पिया था। आप जी अपनी अंतिम सांस तक आप जपु जी साहिब जी का पाठ करते रहे थे। १० नवंबर सन् १६७५ को दिल्ली के चांदनी चौक में अमर शहीद भाई सती दास जी ने जब इस्लाम धर्म स्वीकार करने से इंकार कर दिया तो उन्हें रुई में लपेट कर जिंदा जलाया गया था। अमर शहीद भाई सती दास जी ने जुल्म के खिलाफ लड़ते हुए हंसते - हंसते शहीदी का जाम पिया था। १० नवंबर सन् १६७५ को तरह जुल्मी मुगल सेना ने भाई दयाला जी को एक बड़े बर्तन में पानी डालकर उबालकर शहीद कर दिया था। अमर शहीद भाई मती दास जी और भाई सती दास जी साथ ही अमर शहीद भाई दयाला जी गुरु जी के परम - श्रद्धालु और हमेशा साथ में रहने वाले अत्यंत प्रिय निकटवर्ती साथी थे और इन्हें अपने आध्यात्मिक बल से ध्यान की सर्वोच्य अवस्था प्राप्त थी|

करुणा - कलम और कृपाण के धनी, धन्य -धन्य दशम् पिता गुरु 'श्री गोबिंद सिंघ साहिब जी' जब गुरु गद्दी पर विराजमान हुए तो आप जी ने वचन कर अमर शहीद भाई मती दास जी, भाई सती दास जी के परिवार को तुरंत हाजिर होने के लिए हुकुम किया था| जिसकी जानकारी प्रसिद्ध इतिहासकार केसर सिंघ जी छिब्बर के वंशावली नामा में अंकित है| उस तत्कालीन समय में परिवार के वयोवृद्ध भाई दरगाह मल जी ने अपने सुपुत्र भाई साहिब चंद जी एवं भाई धर्म चंद जी को दशम पिता की सेवा में हाजिर किया था| जब दोनों भाई गुरु दरबार में हाजिर हुये तो गुरु पातशाहा जी ने अत्यंत प्रसन्न होकर स्वयं के कर - कमलों से इन्हें सरोपा पहना कर (सम्मान पूर्वक दिया गया धार्मिक वस्त्र) गुरु दरबार की सेवाएं प्रदीत की थी| इन दोनों भाइयों ने सन् १६९९ की बैसाखी पर खंड़े - बांटे का अमृत छक कर (अमृत पान की विधि ) भाई धर्म सिंघ और भाई साहिब सिंघ के रूप में सिंघ सज गए थे|

जब श्री आनंदपुर साहिब जी में सन् १६९९ की बैसाखी पर अमृत पान करवाया जा रहा था तो भाई साहिब चंद जी और भाई धर्म चंद जी की सेवाओं के लिए गुरु पातशाह जी ने हुकुम किया तो उस समय मामा कृपाल चंद जी (धन्य - धन्य गुरु 'श्री गोबिंद सिंघ साहिब जी के मामा जी) एवं कई प्रमुख हस्तियां उस स्थान पर उपस्थित थी, उस तत्कालीन समय में छिब्बर परिवार के इन दोनों भाइयों ने गुरु पातशाहा जी से कहा था कि आपके द्वारा प्रदीत सेवाओं को क्या हम निभा पाएंगे? उस समय गुरु पातशाहा जी ने वचन कर कहा था कि जब तुम्हारे परिवार के बुजुर्गों ने अपनी शहादतें देखकर 'गुरु पंथ खालसा' की सेवाओं में स्वंय को समर्पित किया है तो तुम भी इन सेवाओं को निश्चित ही निभा पाओगे,उस समय गुरु पातशाहा जी ने भाई धर्म सिंघ जी को गुरु दरबार का लेखनिक एवं भाई साहिब सिंघ जी को दीवान के रूप में मनोनीत किया था|

८ अक्टूबर सन् १७०० में उस तत्कालीन समय के तीन पहाड़ी राजाओं ने एकजूट होकर राजा अजमेर चंद के नेतृत्व में निर्मोह गढ़ के किले पर खालसाई सेना के ऊपर आक्रमण कर दिया था, सवा पहर तक दोनों ही पक्षों में भीषण युद्ध हुआ था| राजा अजमेर चंद के पास एक बहुत बड़ी सेना थी, जो कि तोपों और बारुद के साथ लैस थी, इस भीषण युद्ध में गुर पातशाहा जी की खालसाई सेना ने डटकर मुकाबला किया था, इस युद्ध में भाई साहिब सिंघ जी ने शुरवीरता से युद्ध करते हुए शहीदी को प्राप्त किया था| इस युद्ध में भाई दयाला जी के सुपुत्रों ने भी शहीदियां पाई थी| भाई साहिब सिंघ जी की शहादत के पश्चात  गुरु पातशाहा जी ने एक हुकुमनामा जारी किया था और परिवार को एक उत्तम नस्ल का घोड़ा  ₹ ५०० भी भेंट स्वरूप प्रदान किए थे (नोट:- इस जारी हुकुमनामें की खोज जारी है)|

सन् १७०३ में बिलासपुर के राजा हण्डुरियां के उकसाने पर औरंगजेब के मुगल सैनिकों ने श्री आनंदपुर साहिब जी नामक स्थान पर हमला कर दिया था, उस तत्कालीन समय में भी भीषण युद्ध करते हुए खालसाई सेना ने अभूतपूर्व युद्ध कौशल का परिचय देकर विजय प्राप्त की थी परंतु इस युद्ध में भाई धर्म सिंघ जैसे महान सेनानी ने शहीदी प्राप्त की थी| उस तात्कालीन समय में धन्य - धन्य गुरु 'श्री गोबिंद सिंघ साहिब जी' ने एक हुकूम नामा जारी कर इन अमर शहीदों के छिब्बर परिवार की हरसंभव टहल (मदद / देखभाल) करने का हुक्म पारित किया था|

इस हुकुमनामा के अतिरिक्त गुरु पातशाह जी के चार और हुकुमनामें इस अमर शहीदों के छिब्बर परिवार के पास में उपलब्ध है| इन हुकुमनामों में से एक हुकुमनामें के अनुसार गुरु पातशाह जी ने छिब्बर परिवार को हुकुम दिया था कि अपने किसी पारिवारिक सदस्य को लेखनीक की सेवा के लिए गुरु दरबार में तुरंत हाजिर किया जाए| उस तत्कालीन समय में छिब्बर परिवार में से भाई धर्म सिंघ जी के सुपुत्र भाई गुरबख्श सिंघ जी को गुरु दरबार में लेखन कार्य की सेवाओं के लिए तुरंत हाजिर किया गया था| जब गुरु पातशाहा जी श्री आनंदपुर साहिब जी का किला छोड़कर दक्षिण प्रदेश में गए थे तो भाई गुरबख्श सिंघ जी ने भी आपके साथ ही दक्षिण प्रदेश की यात्रा की थी, उस तत्कालीन समय में गुरु पातशाहा जी ने खुश होकर अपने हस्ताक्षर से युक्त एक हुकुमनामा भटिंडा के गुर सिक्ख भाई देसराज जी के परिवार को जारी किया था| इस हुकुमनामा को भी भाई गुरबख्श सिंघ जी ने स्वयं लेखनीक के रूप में सेवा करते हुए लिखा था| इस हुकुमनामा के साथ ही गुरु पातशाहा जी ने इस भटिंडा के गुर सिक्ख भाई देसराज जी के परिवार को अपनी कुछ निशानियां भी अर्पित की थी|

***(नोट:- भाई देस राज जी के परिवार के संबंध में संपूर्ण जानकारी इस शोध - पत्र के परिशिष्ट में समाहित की गई है)|***

सन् १७०८ में जब धन्य - धन्य गुरु 'श्री गोबिंद सिंघ साहिब जी' अबचल नगर हजूर साहिब जी नांदेड़ में ज्योति - ज्योत समा गए थे तो भाई गुरबख्श सिंघ जी पुन: दिल्ली पधार गए थे, उस तात्कालीन समय में माता सुंदर कौर जी की आज्ञा

प्राप्त कर आप भी भाई मनी सिंघ जी के साथ मिलकर सेना के हवलदार की जवाबदारी के रूप में श्री दरबार साहिब अमृतसर गए थे तो उस समय अहमद शाह अब्दाली की सेना ने अचानक आक्रमण कर दिया था, उस समय हुए युद्ध में अमर शहीद छिब्बर परिवार के भाई गुरबख्श सिंघ जी ने भी शहीदी को प्राप्त किया था| आप जी ने तां उम्र एक उत्तम लेखनिक के रूप में गुरु दरबार में अपनी अनमोल सेवाएं अर्पित कर, श्री दरबार साहिब हरमंदिर में शहीदी का जाम पिया था|

भाई गुरबख्श सिंघ जी के सुपुत्र भाई केसर सिंघ जी छिब्बर 'गुरु पंथ खालसा' के महान विद्वान और प्रसिद्ध साहित्यकार थे| आप जी ने दस गुरुओं की वंशावली को सन् १७८० में रचित कर सिक्ख इतिहास पर अनेकों पुस्तकों को रचित किया था| जब दशम् पिता धन्य - धन्य गुरु 'श्री गोबिंद सिंघ साहिब जी' ज्योति - ज्योत समाये थे तो उस समय भाई केसर सिंघ की आयु मात्र ७ वर्ष की थी| अपनी बाल्यावस्था में आप जी ने स्वयं अपनी आंखों से देखा था कि अहमद शाह अब्दाली की सेना ने हरमंदिर साहिब के ऊपर कैसे हमला किया था? आप जी के द्वारा रचित दसां पातशाहियां की वंशावली नामा, वर्तमान समय में रोपड़ नामक स्थान पर सुबा पंजाब के अजायबघर में सुशोभित है|

सरदार केसर सिंघ छिब्बर जी के पश्चात इनके सुपुत्र सेवा सिंघ हुकुमनामिये के नाम से प्रसिद्ध होये, आप जी ने 'गुरु पंथ खालसा' की सेवाओं में अपना योगदान समर्पित किया था| सन् १८०७ में इस अमर शहीद छिब्बर परिवार (भाई जी का परिवार) के लिए गुरु दरबार श्री अकाल तख्त साहिब जी से ३ हुकूमनामें जारी किए गए थे| उन तात्कालिन हुकुमनामों के अनुसार पाकिस्तान में स्थित जिला गुजरात के शहर गुजरात में जमीन - जायदाद और कुएं भेंट स्वरूप इस छिब्बर परिवार को दिए गए थे, उस तात्कालिक समय में गुजरात शहर मैं भाई लाल सिंघ जी की धर्मशाला के समीप यह छिब्बर परिवार निवास करता था| सन १८०७ में यह संपूर्ण छिब्बर परिवार कारियाना नामक स्थान से स्थानांतरित होकर पाकिस्तान के शहर गुजरात में निवास के लिए आ गया था| इस जिला गुजरात के ग्राम कुंजनावालां में इस परिवार की जमीन जायदाद और कुएं थे|

इस अमर शहीद छिब्बर परिवार में भाई सेवा सिंघ के पश्चात उनकी अगली पीढ़ी भाई मेहताब सिंघ जी एवं उनके सुपुत्र लाल सिंघ जी ने अपनी निष्काम सेवाओं से 'गुरु पंथ खालसा' की फुलवारी को प्रफुल्लित किया था| ब्रह्मज्ञानी लाल सिंघ जी सद् विचारी और उच्च आचरण के शदाशयता महापुरुष थे, आप जी की जीवनी संतो वाली थी, आप जी ने 'गुरु पंथ खालसा' की अत्यंत तन - मन - धन से सेवा की थी| मानव जीवन के कल्याण हेतु की गई निष्काम सेवा ही प्रभु - परमेश्वर को पर्वान होती है| धन्य - धन्य 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का फर्मान है कि:-

विचि दुनिआ सेव कमाईऐ||
ता दरगाह बैसणु पाईऐ||

(अंग क्रमांक २६)

आप जी सेना से निवृत होने के पश्चात एक उत्तम वैद्य और चिकित्सक के रूप में अपनी निष्काम सेवाएं संगतों को अर्पित कर रहे थे| ऐसा कहा जाता कि आप जी के दर से कोई भी जरूरतमंद खाली हाथ नहीं लौटता था| आप जी के द्वारा श्रद्धा से दी गई मिट्टी भी औषधि का काम करती थी, आप जी वचन के धनी थे और आप जी के मुखारविंद से निकले हुए समस्त वचन पूर्ण होते थे, सुबा पंजाब के प्रथम आई. जी. प्रकाश सिंघ जी ग्रेवाल के गृह में आप के वचनों से ही संतान की प्राप्ति हुई थी|

ब्रह्म ज्ञानी भाई लाल सिंघ जी के पश्चात इस अमर शहीद परिवार में भाई संत सिंघ जी और उनकी अगली पीढ़ी भाई अमर सिंघ जी एवं उनकी अगली पीढ़ी भाई अजीत सिंघ जी और वर्तमान समय में भाई चरणजीत सिंघ जी 'गुरु पंथ खालसा' की निष्काम सेवा कर, अपने पुरखों से प्राप्त विरासत को निभा कर अपना जन्म सफल कर रहे हैं| भाई चरणजीत सिंघ जी की अगली पीढ़ी गुर जसपाल सिंघ जी हैं, साथ ही भाई चरणजीत सिंघ जी के भ्राता सरदार हरिंदर सिंघ जी और उनके सुपुत्र सरदार जिगर जीत सिंघ जी एवं सरदार अमरजीत सिंघ जी इस अमर शहीद छिब्बर परिवार के द्वारा भविष्य में की जाने वाली 'गुरु पंथ खालसा' की सेवाओं के लिए समर्पित हैं| ऐसे अमर शहीद और गुरमुख परिवार के लिये धन्य - धन्य गुरु 'श्री ग्रंथ साहिब जी' का फर्मान है कि:-

सतिगुर की सेवा सफलु है जे को करे चितु लाइ॥
मनि चिंदिआ फलु पावणा हउमै विचहु जाइ॥
बंधन तोड़ै मुकति होइ सचे रहै समाइ॥
इसु जग महि नामु अलभु है गुरमुखि वसै मनि आइ॥
नानक जो गुरु सेवहि आपणा हउ तिन बलिहारै जाउ॥
(अंग क्रमांक ६४४)

अर्थात् सतगुरु की सेवा तो ही सफल है जब कोई इसे मन लगाकर करता है, जिससे कि मनचाहा फल प्राप्त होता है और अंतर्मन के अंहकार का समूल नष्ट हो जाता है। ऐसे पुरुष बंधनों को तोड़कर मोक्ष की प्राप्ति करते हैं और उनका जीवन सच्चाई में ही निहित रहता है। इस जग में उस अकाल पुरख का नाम अत्यंत दुर्लभ है। यह नाम गुरमुखों के चित् में ही स्थिर होता है। है नानक! जो अपने गुरु की निष्काम सेवा करता है मैं उस पर कुर्बान जाता हूं।

गुरबाणी का उपरोक्त अंकित पद्य (शबद) से स्पष्ट है कि सिक्ख धर्म के इस महान सेवादार परिवार ने अपनी पीढ़ी दर पीढ़ी सर्वोच्य जीवन को समर्पीत कर, शहीदियों को प्राप्त कर, 'गुरु पंथ खालसा' की महान सेवाओं में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है|

धन्य हे! अमर शहीद महान मतीदास जी और सती दास जी का छिब्बर परिवार और धन्य हे! 'गुरु पंथ खालसा' को समर्पीत इनकी सेवाएं! ऐसे महान परिवार को शतश: नमन!

## ***अमर शहीद भाई मतीदास और भाई सतीदास जी परिवार की विरासत में उपलब्ध हुकूमनामें, कुर्सीनामे के चित्र एवम् जानकारी निम्नानुसार है:-***

१. हुकूमनामा क्रमांक १ जो कि उर्दू भाषा में अंकित है:-

हुकूमनामा

***असल मुताबक नकल***

==========

सतगुरु जी श्री गुरु जी की आज्ञा है. सरबत संगत सब देश की गुरु रखेगा. संगत गुरु गुरु जपना जनम सउरेगा.संगत दा

भला होवी. धरम चंद छिबर कामदार गुरु के घरवा सो गुरु के कम आया था. तिस दे उपर खुशी होवी. जो सिख पुत

गुरुबकश सिंघ छिबर ब्राह्मण नू देग सो गुरु के लंगर पावेगा.सरबत संगत उपर हुकूम है गुरु का धरम चंद के पुत्र / पौत्रे

दी टहल करनी संगत जी गुरु बोहड़ी करेगा. संगत निहाल होगी संगत उपर मेरी खुशी है संगत मेरा खालसा है|

संवत् १७६० असु गियाराह पौह १७१३

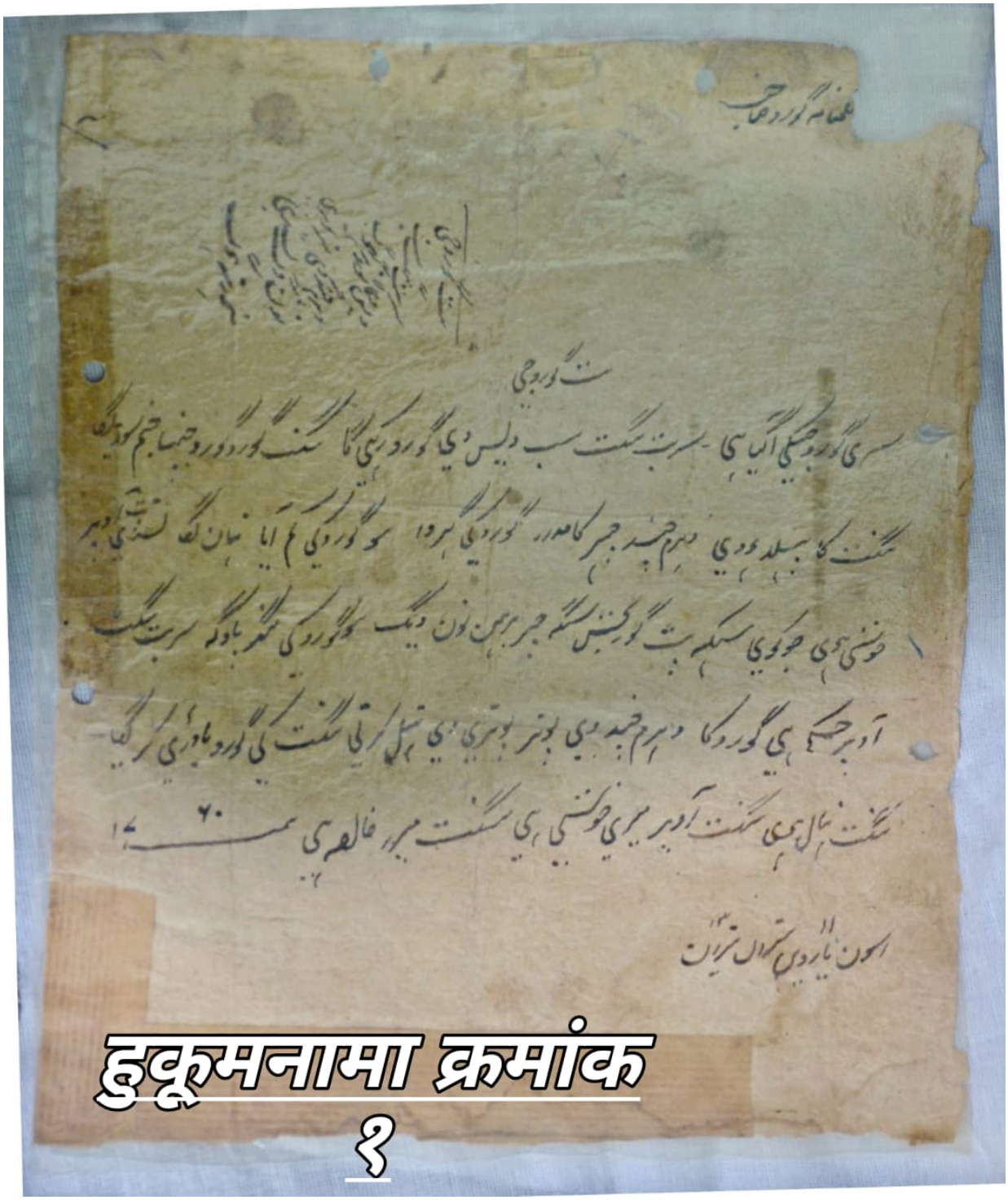

# हुकूमनामा क्रमांक १

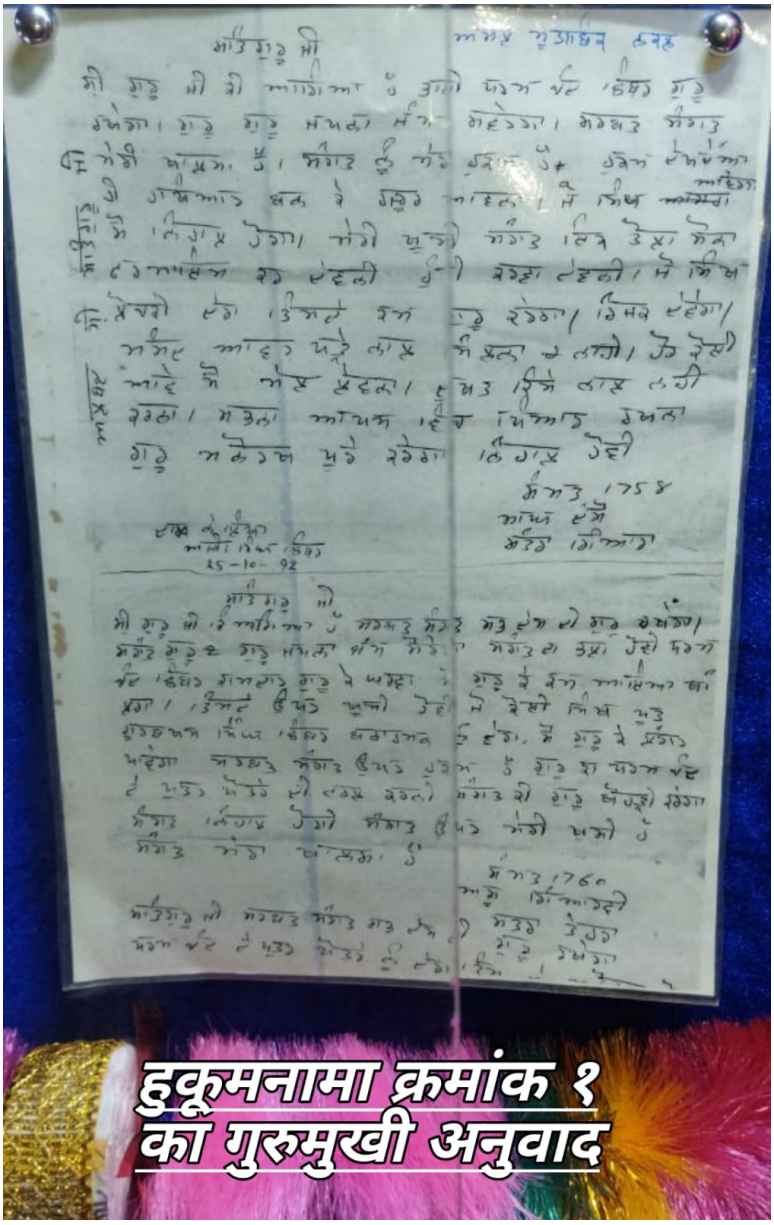


२. ऐतिहासिक स्त्रोतों के अनुसार जब भाई दरगाहमल जी और भाई धरमचंद जी संगतों के साथ गुरु जी से मिलने गये थे तो गुरु जी ने अत्यंत प्रसन्न होकर उर्दू भाषा में हुकूमनामा क्रमांक २ लिखा था जिस में अंकित है वाक्य के अनुसार कोई ₹ १०० का जिक्र है और दस्त मुबारक आपके सिर पर है, इस तरह से कुछ लिखा हुआ है| लिखीत जानकारी अधूरी है, हुकूमनामा बहुत पुराना है एवम् पढ़ने में भी अत्यंत कठिनाई हो रही है| विद्वानों को इस हुकूमनामें पर और खोज करने की आवश्यकता है|

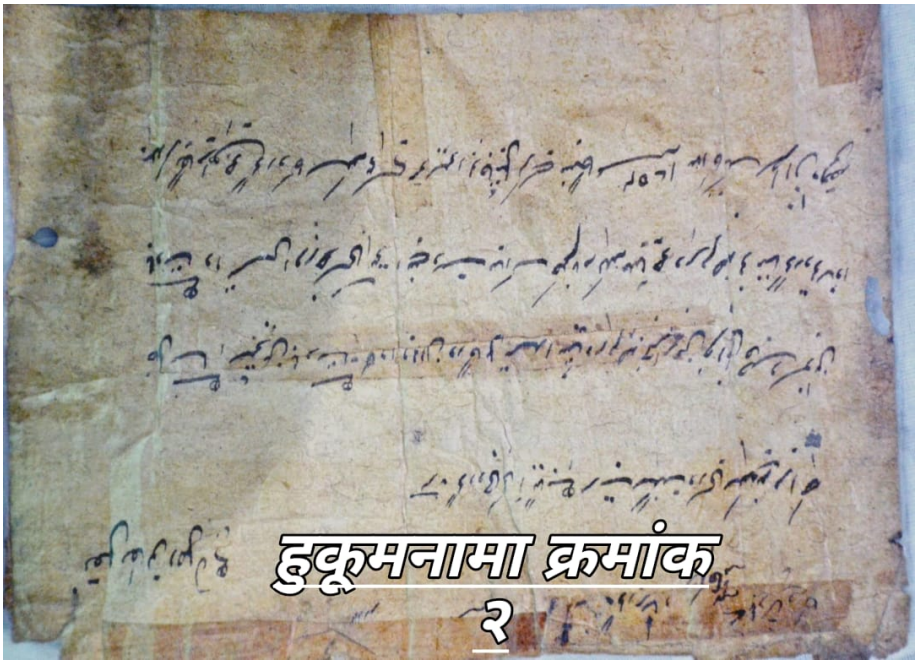


३. हुकूमनामा क्रमांक ३,४ एवम् ५ उर्दू भाषा में लिखीत है, अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी के परिवार

के बुजुर्गों के अनुसार इन हुकूमनामों में निम्नानुसार वचन लिखे हुये है:-

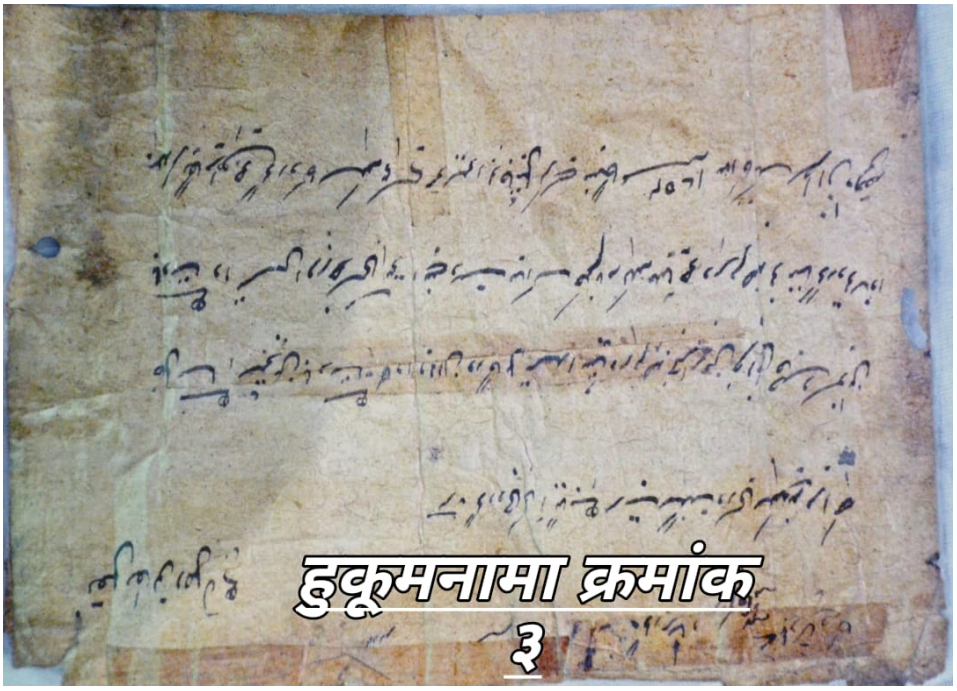

हुकूमनामा क्रमांक
३

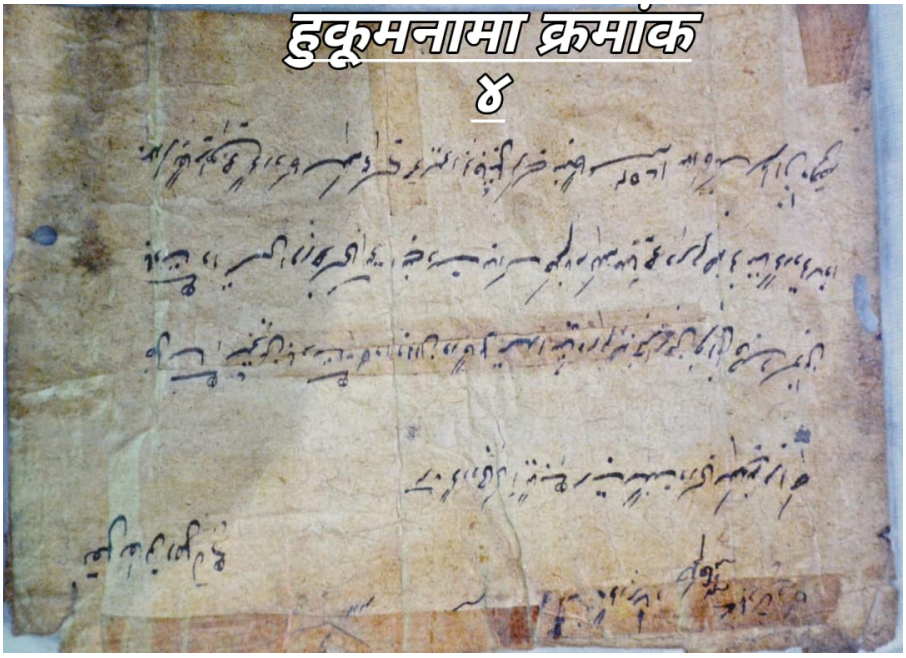


हुकूमनामा क्रमांक
४

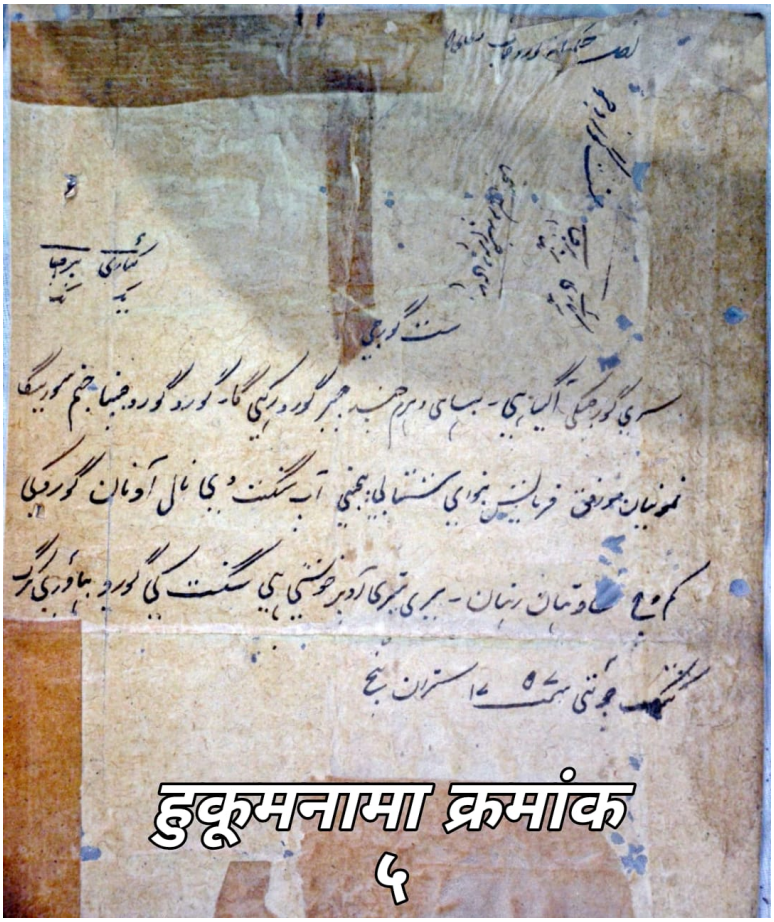

हुकूमनामा क्रमांक ५

अ. बरछा ते कटार तैयार बर तैयार होके ले आउना| अपने कबिले से एक लिखारी घल्लों (भेजो)| (उस समय भाई गुरुबकश सिंघ जी इस सेवा को करने हेतु गुरु दरबार में हाजिर हुये थे|

ब. मसंदा नाल मैल नही करना बाकी सब नाल मिल के रहना दुखद किसे नाल नही करनी|

स. एक तौला सोना हुंडी करवाउ देणी|

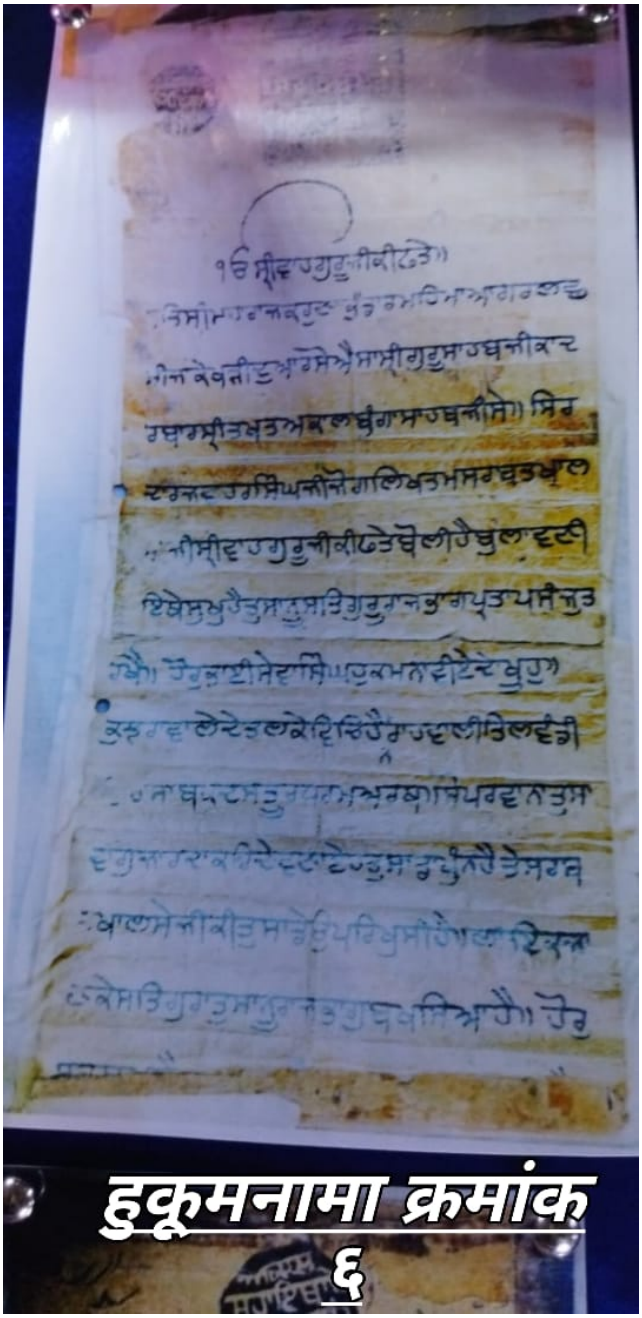


४.हुकूमनामा क्रमांक ६ गुरुमुखी भाषा में सन् १८०७ में श्री अकाल तख्त साहिब से जारी हुआ है, जिसमें अंकित है:-

१ॐ श्री वाहिगुरु जी की फतेह. सत् श्री महाराज. करुणा भंडार. महिमा अपार. लक्षमी जाकै खड़ी दुआर. सो ऐसा सतगुरु साहिब जी का दरबार जी. श्री तखत अकाल बुंगा साहिब जी से सरदार जवाहर सिंघ जी. जोग लिखतम् सरबत खालसा जी श्री वाहिगुरु जी की फतेह. बोली है बुलावणी ऐथे सुख है तुसानुं सतगुरु राज भाग परताप संयुकत रखें और भाइ सेवा सिंघ हुकूमनामिये दे खुह कुजरावाले दे तलके विच है.राह वाली तलवंड़ी साबक दसतूर धरम अरथा सो परवाणा

तुसा वां गुजारणां करदेवणा ऐह तुसाडा पुण है ते सरबत खालसे जी की तुसाडे उपर खुशी है. लायक जाणके सतगुरु तुसानू राज भाग बकशिआ है.

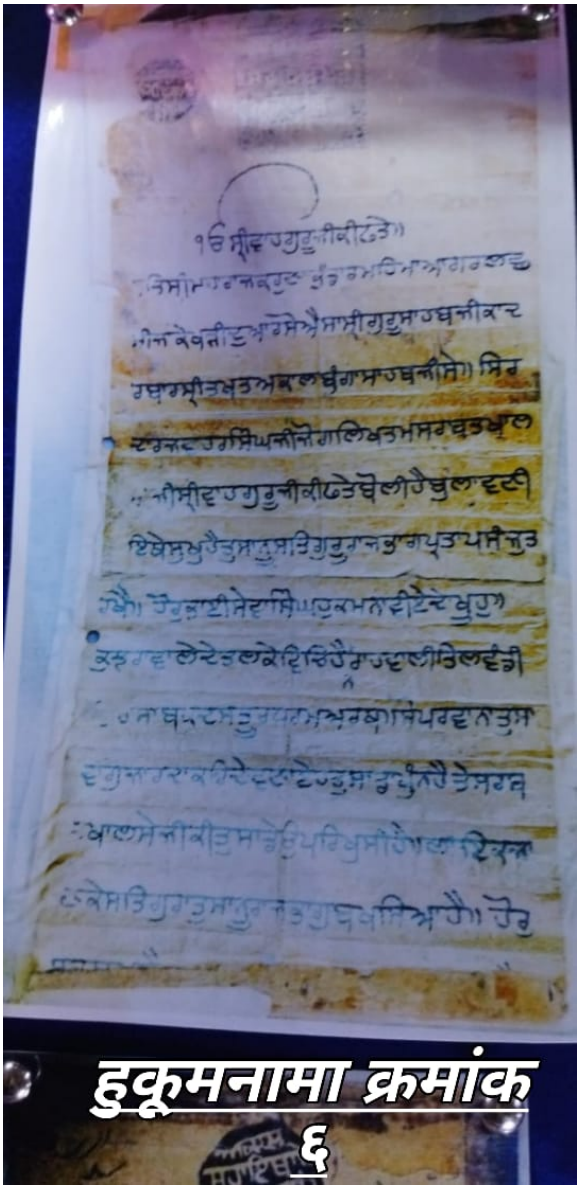


५. हुकूमनामा क्रमांक ७ की असल प्रत मौजूद है, इस हुकूमनामे में अंकित है:-

१ॐ श्री वाहिगुरु जी की फतेह. सत् श्री महाराज. करुणा भंडार. महिमा अपार. लक्षमी जाकै खड़ी दुआर. सो ऐसा सतगुरु साहिब जी का दरबार जी.ऐसा तखत अकाल बुंगा जी. भाई जयमल सिंघ जी जोग लिखतम् सरबत खालसा जी श्री वाहिगुरु जी की फतेह. बोली है बुलावणी. ऐथे सुख है तुसानुं गुरु राजी रखें होर वी भाई सेवा सिंघ हुकूमनामियें दे दो खुह

हैण. राह वाली तलवंडी साबक दसतूर सो तुसां वी परवाणा वाह गुजादाकर देवणा सरबत खालसे जी की तुसां दे उपर खुशी करके लिखीया.

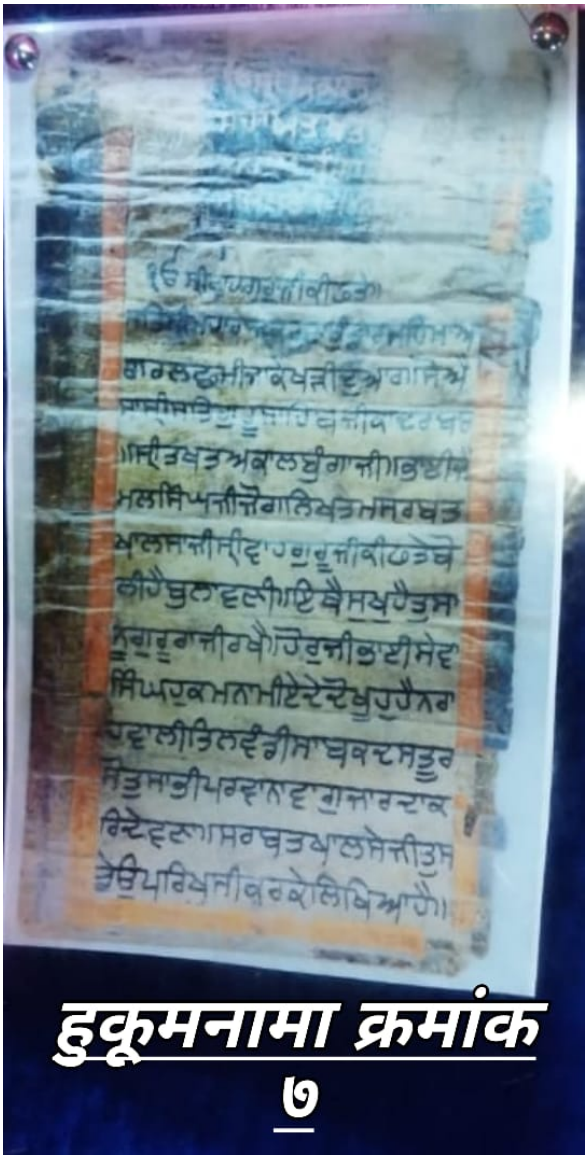


६. निम्नअंकित चित्र में अमर शहीद भाई मतीदास की का कुर्सीनामा है, यह कुर्सीनामा लगभग १५० वर्ष पुरातन है और इसके रचियता भाई लाल सिंघ जी है|

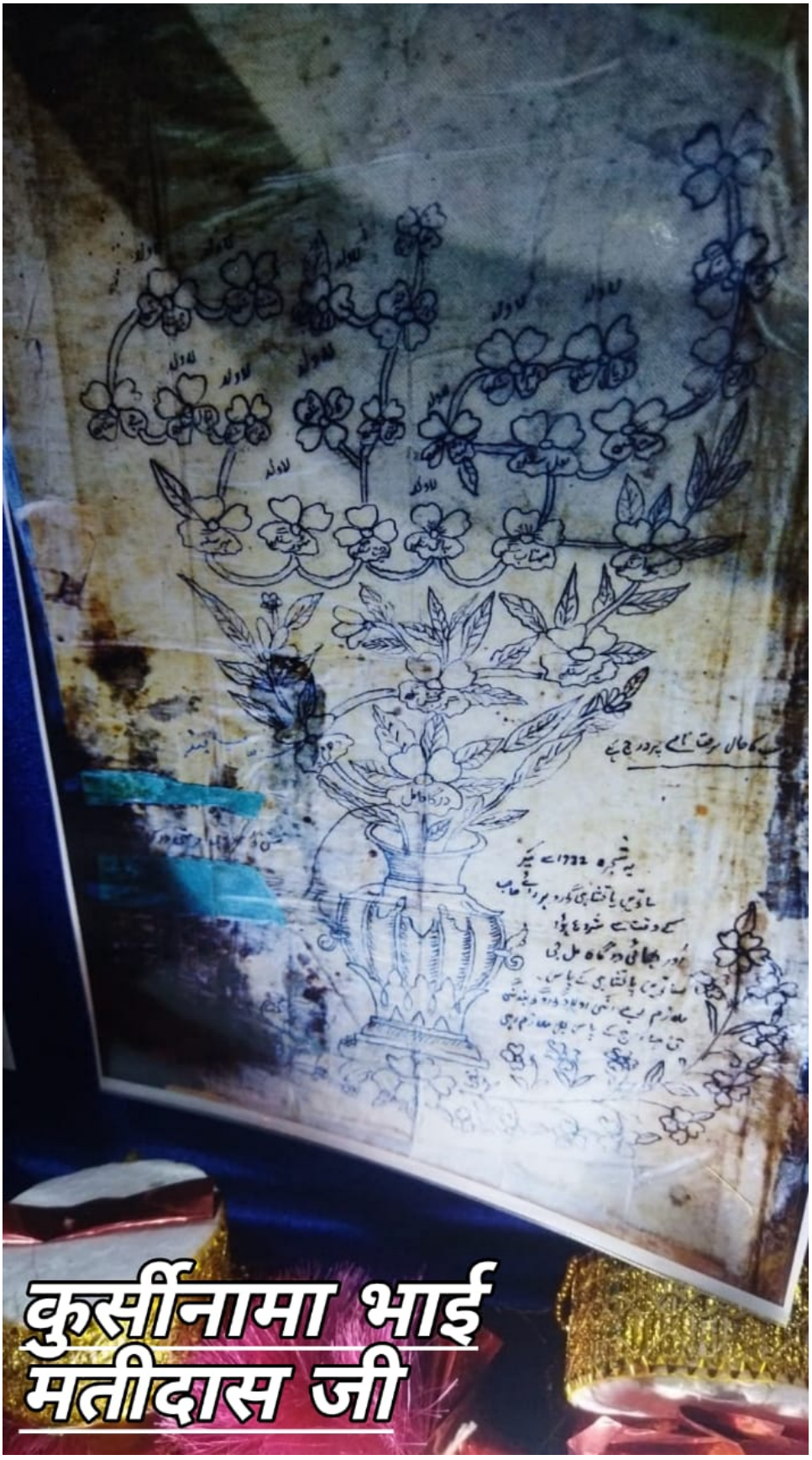
कुर्सीनामा भाई
मतीदास जी

# *परिशिष्ट इतिहास*

बाबा परागा जी के भ्राता बाबा फेरुजी थे एवं उनके सुपुत्र चौपा दास जी, धन्य - धन्य गुरु 'श्री गोबिंद सिंघ साहिब जी' को अपनी बाल्यावस्था में निर - निरालें खेलों से खिलाते थे साथ ही आप जी बाल गोबिंद राय जी को गुरमुखी भाषा भी शिक्षा भी दी थी, पश्चाताप आप जी ने खंडे - बांटे का अमृत छककर, (अमृत पान की विधि) सिंघ सज गए थे| जब गुरु पातशाहा जी दक्षिण की यात्रा करते हुए अबचल नगर श्री हजूर साहिब नांदेड़ में पधारे थे तो आप जी ने भाई चौपा सिंघ जी से रहेतनामा लिखवाया था जो कि भाई चौपा सिंघ जी के रेहतनामा के नाम से अत्यंत प्रसिद्ध है| भाई चौपा सिंघ जी ने भी सन् १७२४ में शहीदी प्राप्त की थी|

जब धन्य - धन्य गुरु 'श्री हरगोबिंद साहिब जी' को जहांगीर ने ग्वालियर के किले में कैद किया था तो उस समय भाई फेरू जी ने अन्य सिक्ख सेवादारों के साथ गुरु पातशाहा जी की रिहाई के संबंध में जहांगीर से मुलाकात कर, वार्तालाप भी किया था|

इस अमर शहीद छिब्बर परिवार के महान योद्धा भाई मुकंद सिंघ जी ने भी गुरु दरबार में अपनी सेवाएं अर्पित की थी एवं चमकौर के युद्ध में शहीद ही प्राप्त की थी|

भटिंडा निवासी भाई देसराज जी की सेवाओं से अत्यंत प्रसन्न होकर धन्य - धन्य गुरु 'श्री गोबिंद सिंघ साहिब जी' ने अपनी कुछ निशानियां और एक हुकूमनामा इस परिवार को भेंट स्वरुप प्रदान किया था, अमर शहीद भाई मती दास जी के पारिवारिक सदस्य भाई चरणजीत सिंघ से प्राप्त ऐतिहासिक स्त्रोतों के अनुसार इस हुकूमनामा को लिखने की सेवा भाई धर्म चंद जी के सुपुत्र भाई गुरबक्श सिंघ जी ने की थी, भाई गुरबक्श सिंघ जी के सुपुत्र भाई केसर सिंघ जी छिब्बर थे, जिन्होनें दसां पातशाहीयों का वंशावली नामा रचित किया है| इस शोध - पत्र के लेखक सरदार रणजीत सिंघ अरोरा 'अर्श' ने जब भाई देसराज जी के वंशज भाई उपींदर सिंघ जी से दूरभाष कर वार्तालाप किया तो ज्ञात हुआ कि आप जी के वंशज भाई वेलु जी पंचम पातशाहा, शहीदों के सरताज धन्य - धन्य गुरु 'श्री अरजन देव साहिब जी' के समय से ही सिक्ख धर्म से जुड़ कर अपनी सेवाएं निभा रहे है| भाई वेलु जी ने अपने समय में श्री दरबार साहिब जी की उसारी के समय अपनी अमूल्य और निष्काम सेवाएं 'गुरु पंथ खालसा' को अर्पीत की थी| आप जी का परिवार पीढ़ी दर पीढ़ी 'गुरु पंथ खालसा' की सेवाओं में समर्पीत है| आप जी ने स्वयं जानकारी देकर बताया की बैसाख २७ संवत् १७५६ के दिवस श्री आनंद पुर साहिब जी में कुछ अपनी चुनिंदा निशानियां और हुकूमनामा गुरु पातशाहा जी ने हमारे परिवार को भेंट स्वरुप प्रदान किया था| यह निशानियां निम्नलिखीत अनुसार है:-

१. रेशमी रुमाल २.गुरु पातशाहा जी के जोड़े ३.कटार (छोटी कृपाण) ४.कलम ५. बाज की डोर ६. श्री साहिब (कृपाण) की सुनहरी मूठ, जिस पर सोने की मिनाकारी की हुई है और मूठ पर लिखा है, श्री अकाल सहाय भाई सरायण सिंघ जी| ७.एक पैसा का सिक्का ८. लकड़ी की मोहर ९. दो चौले साहिब जी जिनकी बाहों की लंबाई एक गज ११ गिरै (देशी नाप के अनुसार)| यह चौले रक्त रंजित है अर्थात् उपयोग किये हुये है| १०.ककक्ड़ नामक जानवर और मृग की खाल से निर्मीत पायजामें जिनका नेफा सुती और रेशम के कपड़े से निर्मीत्त है और एक हुकूमनामा जिस पर धन्य - धन्य गुरु 'श्री गोबिंद सिंघ साहिब जी' के हस्ताक्षर है, इस हुकूमनामें पर अंकित शब्दों के अनुसार इस में लिखा है:-

१ੴ सतिगुरु जी
सिरी गुरु जी की आगिआ है, भाई देसराज सरबत संगत गुरदास भगते
फफड़े का सहलंग गुरु रखेगा सतिगुरु गुरु जपना जनम साउरेगा
भाई देसराज हजूर आइऊ खुशी होई कार संगत
भाई देसराज नूं देणी मेरी खुशी है निहाल हौवे
मिती वैशाख २७, संमत १७५६ सतरा ५.
नोट:- इन निशानियों और हुकूमनामा के चित्र एवम् भाई उपींदर सिंघ जी की वंशावली निम्नानुसार है:-

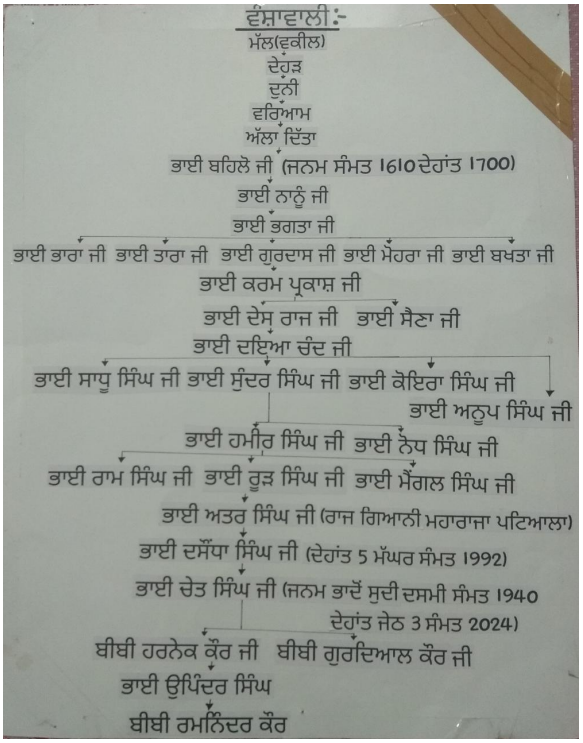


**भाई उपींदर सिंघ जी की वंशावली**

**विशेष नोट:-**

१. गुरु 'श्री ग्रंथ साहिब जी' के पृष्ठों को गुरुमुखी में सम्मान पूर्वक 'अंग' कहकर संबोधित किया जाता है|

२. गुरुबाणी के पद्यों का हिंदी अनुवाद 'गुरुबाणी सर्चर ऐप' को मानक मानकर किया गया है|

३. मेरे इस तृतीय शोध पत्र को लिखने में यदि कोई त्रुटि हो तो अंजान बच्चे समझकर बक्शना जी, 'संगत बक्शनहार है'|

**भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरु करतारु ||**

(अंग क्रमांक ६१)

_अर्थात् सभी गलती करने वाले है, केवल गुरु और सृष्टि की सर्जना करने वाला ही अचुक है|

**वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह!**

# शोध पत्र की कुंजी

१.अमर शहीद भाई मतीदास जी, भाई सतीदास और भाई दयाला जी धन्य - धन्य गुरु 'श्री नानक देव साहिब जी' की नौवीं ज्योत धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी के अत्यंत प्रिय और लाड़ले साथी थे, इन्होनें इंसानियत की जमीर के लिये अपनी शहादतें देकर अनुपम उदाहरण दुनिया में प्रस्तुत किया है| यह शोध पत्र 'टीम - खोज विचार के स्वतंत्र चिंतन का निचोड़ है|

२.अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सती दास जी ने धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' के सानिध्य में रहकर पूर्व भारत वर्ष की यात्रा कर आम लोगों में सिक्खी और गुरमत का प्रचार - प्रसार किया था|

३.अमर शहीद भाई मतीदास जी के संपूर्ण परिवार ने समय - समय पर  गुरु दरबार की सेवा कर, संपूर्ण समाज को एक नई दिशा प्रदान की थी|

४.अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सती दास के जीवन चरित्र से सीखने को मिलता है कि गुरु के बहाने में रहकर कैसे जीवन व्यतीत करना चाहिए?

५.अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी ने स्वयं कष्ट सहन कर, शहिदीयों को प्राप्त कर, उस अकाल पुरख के बहाने में रहकर हमें कष्टों को सहन करने की महत्वपूर्ण सीख दी है| वास्तव में उस तात्कालीन समय में इंसानियत की जमीर के लिये दी गई इन शहीदियों ने सिक्ख धर्म की संवेदना के विस्तृत फलक एवम् सारोकारों के अनंत क्षितीज और समाज के लिये सर्वोच्य त्याग जैसे  विविध आयामों का स्पष्ट प्रकटीकरण किया है|

६.अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी अत्यंत उंची अवस्था के आध्यत्मिक बल के मालिक थे, उन्होंने गुरु पातशाहा जी से केवल धीरज, सब्र और संतोष की दात ही मांगी थी| गुरु पातशाहा जी का दस्ते मुबारक अपने अत्यंत प्रिय सिक्खों पर था, जिस कारण से अमर शहीद भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी और भाई दयाल जी ने शहीदी के इस अजर को जरा था (वह दुख: जो आम इंसान सहने की कल्पना भी नही कर सकता है)|

७.अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी ने गुरु जी के सानिध्य में रहकर निस्वार्थ और निरवैर सेवाएं प्रदित कर, शहिदीयों को पाकर अपना जीवन सफल किया था|

८.अमर शहीद भाई सतीदास जी फारसी, अरबी और ब्रज भाषा के उच्च कोटि के विद्वान थे, धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' के मुखारविंद से उच्चारित वाणी को आप जी तुरंत नोट कर के सुरक्षित करते थे एवम् उन्हें सरल भाषा

में अनुवाद कर आम संगतों में प्रचारित - प्रसारित करते थे| इस सरल भाषा के अनुवादित शब्दों ने ही पश्चात राष्ट्र भाषा हिंदी और उर्दू का रुप धारण किया है अर्थात् हिंदी भाषा और उर्दू भाषा की उत्तपत्ती के प्रारंभिक दौर में आप जी का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है|

९. धन्य - धन्य गुरु 'श्री ग्रंथ साहिब जी' का फर्मान है कि:-

गुरमुखि खोजत भए उदासी||

दरसन कै ताई भेख निवासी||

साच वखर के हम वणजारे||

नानक गुरमुखि उतरसि पारे||

(अंग क्रमांक ९३९)

अर्थात् हम गुरमुख संतों की खोज में उदासी बने है और संत महापुरुषों को खोज कर के उनके दर्शन करने के लिये यह वेश धारण किया है| हम सत्य के नाम के व्यापारी है, गुरुमुख जीव भव सागर के पार लग जाते है|

उपरोक्त गुरुबाणी को सारगर्भीत कर 'गुरु पंथ खालसा' की टीम 'खोज - विचार' के आधार स्तंभ इतिहासकार सरदार भगवान सिंघ जी 'खोजी' के द्वारा अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी के परिवार के सदस्य जो की वर्तमान समय में बिलासपुर जिला रामपुर (उत्तर प्रदेश) में निवास करते है, को खोजा गया था, आप जी स्वयं २३ जुलाई सन् २०२१ को इन पारिवारिक सदस्यो की खोज में उनके निवास स्थान पर पहुंचे थे और अपने 'खोज - विचार' फेसबुक के चैनल के माध्यम से आप जी ने इस परिवार के पास उपलब्ध सभी पुरातन हुकूमनामें और कुर्सीनामे एवम गुरु पातशाह जी की उपलब्ध निशानियों के संगतों को दर्शन करवाये थे साथ ही अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी के पारिवारिक सदस्यों को 'गुरु पंथ खालसा' की मुख्य धारा से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य भी किया था|

नोट:- अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी के परिवार के सदस्यों के पास तीन पत्र फारसी भाषा में कलम द्वारा लिखे गये है, जिनका अनुवाद कर खोज करने की आवश्यकता है|

१०. भारत - पाकिस्तान विभाजन के पूर्व पाकिस्तान में स्थित गुजरात शहर में लाल सिंघ वाली धर्मशाला (सुनारों का मौहल्ला) पर छिब्बर परिवार द्वारा निर्मीत तपोस्थान पर संगतें गुरमत अनुसार जपु जी साहिब का पाठ कर , अपनी मुंह - मांगी मुरादें पुरी करती थी, वर्तमान समय में अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी के परिवार के द्वारा बिलासपुर जिला रामपुर (उत्तर प्रदेश) में इसी तर्ज पर एक तपोस्थान निर्मीत किया गया है, सच जानना इस स्थान पर भी जो श्रृध्दालु गुरमत अनुसार जपु जी साहिब जी का पाठ कर मुरादें मांगेगा वह निश्चित ही पुरी होंगी| परिवार के इस इतिहास को अलग से क्रमबद्ध कर उस पर अधिक शोध करने की आवश्यकता है साथ ही इस शहीद परिवार के पास उपलब्ध हुकूमनामों को रासयनिक प्रक्रिया कर सुरक्षित करना भी अत्यंत आवश्यक है एवम् इस शहीद परिवार के शहीद सदस्यों के चित्रों को संग्रहीत करना भी अत्यंत आवश्यक है|

११. उस तात्कालीन समय में सनातन धर्म की रक्षा के लिये धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' और उनके अनन्य भक्तों के द्वारा दी गई शहीदीयों ने मानव मस्तिष्क में एक चेतना सृजित कि की, इस दुनिया में मानवी अधिकार के हकों की रक्षा भविष्य में कैसी की जानी चाहिये? निश्चित ही इन महान शहीदीयों ने मानवाधिकार के हकों की नींव रखी थी| इन महान शहीदीयों के पश्चात ही दुनिया में मानवाधिकार संगठनों का उदय हुआ और विश्व के अधिकतर देशों में लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिये संघर्ष प्रारंभ हुआ था|

१२. धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' और उनके अनन्य भक्तों के द्वारा दी गई शहीदीयों के पश्चात धन्य - धन्य गुरु 'श्री गोबिंद सिंघ साहिब जी' ने वचन किये थे:-

**दोहरा||**

ठीकरि फोरि दिलीस सिरी प्रभ पुरि कीया पयान||

तेग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आनि||

तेग बहादुर के चलत भयो जगत को सोक||

है है है सभ जग भयो जै जै जै सुर लोकि||

==========xxx==========

# शोध पत्र के विषय से संबधित साहित्य का पुनरावलोकन

१.इस विषय पर राष्ट्र भाषा हिंदी में अभी तक कोई शोध पत्र प्रकाशित नही हुआ है|

२.प्रसिद्ध सिक्ख इतिहासकार सरदार प्यारा सिंघ जी 'पदम्' द्वारा रचित 'गुरु की साखियां' में उत्तम परंतु इतिहास की संक्षिप्त जानकारी प्रदित की गई है|

३.अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी के पारिवारिक सदस्य सरदार चरणजीत सिंघ जी छिब्बर के द्वारा इस संपूर्ण इतिहास के संबंध में अति उत्तम और मार्मीक जानकारी शोधार्थी को प्रदित की गई है साथ ही शोधार्थी को इस शोध पत्र को रचित करने के लिये आप जी ने विशेष अनुरोध किया था| शोधार्थी स्वयं इस इतिहास की जानकारी से रोमांचित था और शोधार्थी ने इस इतिहास के व्यापक अवदान को शिद्दत से महसूस कर, बड़ी मार्मीकता से अंकित किया है|

४.इस विषय पर उत्तम साहित्य की रचनाओं को लिखने की एवम् पी.एच.डी. के लिये विद्यार्थीयों को प्रोत्साहित करने की आवश्कता है|

# शोध पत्र का उद्देश्य

१.अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी के जीवन चरित्र के विशुद्ध इतिहास को प्रचारित - प्रसारित करना|

२.इस शोध पत्र को विशेष रुप से राष्ट्र भाषा हिंदी में लिखा गया है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों तक इस इतिहास की जानकारी पहुंच सकें|

३.ऐसे शोध पत्रों को लिख कर अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी जैसे महान गुरु सिक्खों के इतिहास को सम्मान प्रदान करना|

४.अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी  के सानिध्य में रहकर उस अकाल पुरख के बहाने को मीठा मानकर, इंसानियत की जमीर के लिये अमर शहीद भाई मतीदास और भाई सतीदास जी के द्वारा दी गई महान शहिदीयों का जीवन चरित्र भविष्य की पीढ़ी के लिये उत्तम आयाम प्रदान करते है| इस से हमें शिक्षा मिलती है कि इंसानियत के जमीर की रक्षा करना प्रत्येक गुरसिक्ख का कर्तव्य है|

# शोध पत्र का निष्कर्ष

यह शोध पत्र मेरे जीवन का तृतीय शोध पत्र है, इस शोध पत्र को परंपरागत ऐतिहासिक विधि से लिखा गया है| इस शोध पत्र में अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी के जीवन चरित्र के अनेकों आयामों को क्रम बद्ध लिख कर न्याय देने का प्रयत्न किया गया है| इस शोध - पत्र के ऐतिहासिक लम्हों की शब्दावली को एक सार्थक दिशा संकेत की तरह पिरोया गया है जिस कारण से यह शोध पत्र एक सुंदर फलाश्रुती के रुप में निखरकर आया है| अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी के वंशजों के द्वारा ३ अप्रैल सन् २०२२ को धन्य - धन्य गुरु 'श्री तेग बहादर साहिब जी' के ४०० वर्ष प्रकाश पर्व का आयोजन अत्यंत महत्वपूर्ण है कारण अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी के विशुद्ध इतिहास को बड़े पैमाने पर प्रचारित - प्रसारित करने हेतु ऐसे उपक्रमों की अत्यंत आवश्यकता है| मैं आशा करता हूं कि अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी के पारिवारिक सदस्य भविष्य में भी ऐसे उपक्रमों को आयोजित करते रहेगें| ऐसे कार्यक्रमों के आयोजनों से ही विश्व के समस्त विद्वानों के विचारों को अदान - प्रदान हेतु निश्चित ही एक ठोस मंच की प्राप्ती होती है|

# संदर्भ सुची

१. प्रसिद्ध सिक्ख इतिहासकार सरदार प्यारा सिंघ जी 'पदम' जी द्वारा रचित सुरज प्रकाश और 'गुरु की साखीयां'|

२. वारां भाई गुरदास जी|

३. धन्य - धन्य गुरु 'श्री ग्रंथ साहिब जी'|

४. गुगल सर्च इंजन|

५.अमर शहीद भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी के पारिवारिक सदस्यों के द्वारा उपलब्ध परंपरागत इतिहास जो की उनके जीवन में मनोवेगों के घनीभूत दबाव से उत्पन्न उद्गार थे, ऐसा शोधार्थी ने स्वयं महसूस किया है|

६.यु - ट्युब पर उपलब्ध 'गुरु पंथ - खालसा' के माहन इतिहासकार भाई पिंदरपाल सिंघ जी, ज्ञानी इंदर पाल सिंघ जी, कथा वाचक ज्ञानी अमरिक सिंघ जी, ज्ञानी गुरबक्श सिंघ जी (इंग्लैंड निवासी) इत्यादि के व्याख्यान |

७. गुरुबाणी सर्चर ऐप पर उपलब्ध साहित्य।

**धन्यवाद!**

शोधार्थी:-

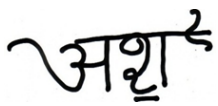

(सरदार रणजीत सिंघ अरोरा 'अर्श'

स्थल:- बिलासपुर जिला रामपुर (उत्तर प्रदेश)  तारिख:- ०३/०४/२०२२